कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
एस. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी.ए. स्नातक, हिन्दी, प्रतिष्ठा
पार्ट III

'कर्मभूमि' उपन्यास में विचार और उद्देश्य एवं भाषा और शैली।

उपन्यास में पात्रों के विचार लेखक के विचार के ही प्रतिच्छाया होते है। उपन्यास अपने विचारों को व्यक्त नहीं करते। प्रायः गतिशील चरित्र एवं नायक ही उपन्यासकार के विचारों को व्यक्त करते है पात्र दो वर्गों में विभाजित हो जाते है और दोनों के विचार सामने आता है। इसमें संघर्ष होता है। और नायक के विचारो की पुष्टि से उपन्यास समाप्त होता है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में मुंशी प्रेमचन्द का प्रतिनिधित्व अमरकान्त करता है। उपन्यासकार के मन में जितनी तरह की बातें है वह सब अमरकान्त के माध्यम से कहा जाता है। एक और सहपात्र है डाक्टर शांतिकुमार जो वास्तव में उपन्यासकार की छवि है। कभी-कभी आभास होता है शांतिकुमार न होकर प्रेमचन्द ही स्वयं अपने आपको पाठकों के सामने प्रस्तुत कर देते है। जैसे —

" हमारा किसी से बैर नहीं है। जिस समाज में गरीबों के लिए स्थान नहीं, वह उस घर की तरह है जिसकी बुनियाद न हो। कोई हलका-सा धक्का भी उसे जमीन पर गिरा सकता है। मैं अपने धनवान और विद्वान सामर्थ्यवान भाइयों से पूछता हूँ क्या यही न्याय है कि एक भाई तो बंगले में रहे, दूसरे

को झोपड़ा भी नसीब न हो। क्या तुम्हें अपने ही जैसे मनुष्यों को इस दुर्दशा में देखकर शर्म नहीं आती। तुम कहोगे हमने बुद्धिबल से धन कमाया है क्यों न उनका भोग करें। इस बुद्धि का नाम स्वार्थ बुद्धि है और समाज का संचालन स्वार्थ बुद्धि के हाथ आ जाता है। न्याय बुद्धि से गद्दी से उतार दी जाती है। तो समझ लो कि हमेशा कुचली नहीं जा सकती ममता जीवन का तत्व है। यही एक दशा है। जो समाज को स्थिर रख सकती है थोड़े से धनवानों को हरगिज अधिकार नहीं है कि वे जनता को ईश्वरदत्त वायु और प्रकाश का अपहरण करे। यह विशाल जनसमूह उसी अन्धकार, उसी अन्याय का रोष रुदन है। अगर धनवानों की आँखें अब भी नहीं खुलती, तो उन्हें पछताना पड़ेगा यह जागृत युग है। जागृति अन्याय को सहन नहीं कर सकती। जागे हुए आदमी के घर में चोर और डाकू की गति नहीं।

भाषा और शैली

साहित्य में भाषा सम्प्रेषणीयता की महत्वपूर्ण होती है। साहित्यकार कहता नहीं अभिव्यक्त करता है। अभिव्यक्ति का अर्थ है। कथन का बिम्बों के माध्यम से पाठकों के मन पर इस तरह उतारना कि पाठक उस में रम जाये।

उपन्यास का मुख्य अंग शैली। काव्य में शैली का वही स्थान है जो मनुष्य की उसकी आकृति और वेश-भूषा का है। प्रस्तुत उपन्यास 'कर्मभूमि' भाषा एवं शैली की दृष्टि से बेजोड़ एवं सुन्दर कलाकृति है। भाषा की सादगी, प्रसाद शैली का समायोजन है इसकी कलात्मकता को और बढ़ा देता है। वैसे तो प्रेमचन्द की विशेषता रही है, सरल और सहजता। दोनों ही इस उपन्यास में जाहिर है।

मुहावरेदार भाषा की पकड़ प्रेमचन्द की अद्भुत थी। कहीं-कहीं तो काव्यमय भाषा का ऐसा निर्माण करते है जैसे कोई जादूगर अपनी कला से सम्मोहन मंत्र का इस्तेमाल किया है। प्रस्तुत उपन्यास 'कर्मभूमि' में भी ऐसे कई स्थल है जो जिज्ञासा के साथ रसमय है।

इस तरह हम देखते है "कर्मभूमि" उपन्यास में उपन्यास कला एवं उसके तात्विक विवेचन में उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द को पूर्ण सफलता मिली है।